Vol 4 Issue 2 March 2014

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-2 | March-2014
Available online at www.isrj.net

भारतीय खेल प्रशासन, प्रबन्धन और समस्यायें

बी.एल. बिस्ट , नवल किशोर

सेवानिवृत्त प्राध्यापक, हेमवती नन्दन बहुगुणा गढवाल विश्वविद्यालय (श्रीनगर)
षोध छात्र, भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर (राजस्थान)

सारांश :- खेलों का भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही बडा महत्व रहा है। खेल मात्र मनोरंजन का ही साधन नही है अपितु यह सामाजिकता, लोगो को जोडने तथा ज्ञानार्जन तथा शारीरिक एवं मानसिक मजबूती के लिये भी अनिवार्य माना जाता है। कदाचित इन्ही विशेषताओं को संज्ञान में रखते हुये भगवान कृष्ण का सखाओं के साथ कन्दुक खेलने से लेकर प्राचीन भारतीय इतिहास में अनेक प्रकार के खेलो का वर्णन देखने को मिलता है। आज भी खेल हमारे देश के गौरव को बढाने के लिये जाने जाते है। प्राचीन यूनान में जन्मी ओलंपिक परम्परा आज कई प्रतियोगिताओं के रूप में आपसी प्रेम एवं सद्भाव बढाने का कार्य कर रही है। किन्तु जैसे जैसे प्रतियोंगिताओं की स्पर्धा कठिन हो रही है वैसे–वैसे भारत का प्रदर्शन बदतर हो रहा है। कभी एक तीर से जल में देखकर मछली की आंख भेदने वाले धर्नुधर के देश मे तीरंदाजी से लेकर प्रत्येक खेल में फिसड्डी साबित हो रहे है। ऐसा नही है कि देश में प्रतिभाओं की कोई कमी है या उनसे सम्बन्धित संस्थाओं की कमी है। मगर कमी है तो कानूनो के अनुपालन में प्रशासन एवं प्रबन्धन में जो इन भारतीय प्रतिभाओं के साथ न्याय नही कर पा रहा। प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्ता ने भारतीय खेल के प्रशासन एवं प्रबन्धन के सन्दर्भ में विचार प्रस्तुत करके इसके निराकरण हेतु कुछ सुझाव देने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्दावली:– खेल प्रशासन, प्रबन्धन, घोटाले, खिलाडियो की वित्तीय समस्या, निराकरण एवं सुझाव इत्यादि।

प्रस्तावना :

किसी राष्ट्र के इतिहास में वहां के मानव संसाधनों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मानव संसाधन के अभाव में प्राकृतिक एवं भौतिक संसाधन व्यर्थ साबित हो सकते है। कुशल और कार्यक्षम मानव प्राकृतिक एवं भौतिक संसाधनो का समुचित उपयोग करके न केवल अपने राष्ट्र को बल्कि सम्पूर्ण मानव समाज को उन्नति की ओर अग्रसर करता है। कुशल एवं सक्षम मानवीय संसाधनों के निर्माण की नींव के लिये आवश्यक है कि व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहे। इस प्रकार से मानवीय संसाधनों का निर्माण करने के लिये पूर्व काल से ही शिक्षा के साथ–साथ खेलो का विशेष महत्व रहा है। ऋग्वेद के मंत्र ''सं गच्छध्वं सं वदध्वंम (10/191/2)'' अर्थात ''मिलकर चलो और मिलकर बोलो'' में ही सामूहिक शक्ति एवं सामाजिक परम्परा निर्वहन की सोच देखी जा सकती है। सामाजिकता एवं सामूहिक तरीके से करने की परम्परा खेलो के द्वारा जितनी शीघ्रता से विकसित की जा सकती है, सम्पूर्ण विश्व में अन्य कोई विधि उतनी कारगर नही है। खेलो के इसी महत्व को दृष्टिगत रखते हुये संसार के समस्त देश खेलों को अपने राष्ट्र उत्थान का प्रतीक मानते आ रहे है। यूनान से लेकर भारतवर्ष तक सभी स्थानों पर खेल व उसकी पवित्र भावना का आदर किया जाता है। कदाचित् इस महत्व को देखते हुए खेल परम्परा को जीवित रखने, संयोजन करने, उत्थान करने एवं विकास करने की दृष्टि से समस्त राष्ट्र अपने यहां इनसे सम्बन्धित प्रबन्धन एवं प्रशासन की व्यवस्था सुनिश्चित करते है एवं प्रशासनिक अधिकारी खेलों के आयोजन एवं विकास का कार्य पूरी तन्मयता से कराने की चेष्टा करते है।

भारत जो खेलों की प्राचीन परम्परा का ध्वजवाहक रहा है। जहां कभी मनोरंजन एवं धार्मिक उद्देश्यो के अनुसार विभिन्न प्रकार की क्रीडाये जैसे आखेट, मृगया क्रीडा, चतुरंग क्रीडा, लतो डाह क्रीडा, वीट क्रीडा, वाजिंवस्य क्रीडा, छालिक्य क्रीडा, नियुद्ध क्रीडा, नृत्य क्रीडा, वनभोज क्रीडा, कन्दुक क्रीडा, जल क्रीडा, हारिण क्रीडा, नेत्रबन्ध क्रीडा, निलयन क्रीडा समेत अनेकोनेक क्रीडायें प्रचलित थी, जिसे राजा महाराजा खेलते थे एवं उनके देखभाल व नियंत्रण के लिये अधिकारी भी रखे जाते थे। आज इसी भारत भूमि पर खेलों की स्थिति दयनीय है। ऐसा नही है कि जब भारत में खेलों का सम्मान नही हो रहा था अथवा भारतीय खिलाडियो में राष्ट्र व खेलों के प्रति जज्बे की कोई कमी है। सत्यता तो यह है कि अब खेल मनोरंजन नही व्यवसाय बन गया । खेल आदर नहीं अब जेब भरने का एक साधन बन गये। शायद इसी कारण से खेलों से सम्बन्धित अधिकारी खेलों के साथ खिलवाड़ करने पर आमदा हो गये। यही वजह है कि 21वीं सदीं का यह मजबूत राष्ट्र पदकों की तालिका में छोटे–छोटे एवं गरीब से गरीब देश के सामने बौना नजर आता है।

भारत निःसन्देह प्रगतिशील राष्ट्र है, किन्तु यह एक कड़वा सत्य है कि हम विश्व के कई गरीब देशो सें खेलों के मुकाबले में बहुत पीछे है। यह स्थिति तब है जबकि देश के कोने–कोने में खेल प्रतिभायें भरी पड़ी है। इसका प्रमाण है कि, जूनियर स्तर पर भारतीय खिलाडियों का प्रदर्शन लाजवाब होता है किन्तु सीनियर मुकाबलों में हम फिसड्डी साबित होते है, तो फिर कमी है कहाँ? शायद नेतृत्व में या प्रशासन में ! क्योंकि हम खिलाडियों की प्रतिभा का सही न्याय नही कर पाते है और हमारे खिलाड़ी उचित ट्रेनिंग एवं सुविधाओं के अभाव में विश्व स्तर के खिलाडियों का मुकाबला नही कर पाते। अब प्रश्न उठता है कि क्या धन का कोई अभाव है?यह तथ्य भी पूर्ण रूप से सत्य नही है, क्योंकि सरकार हर वर्ष खेलों के उत्थान पर काफी पैसा खर्च करती है बावजूद इसके यह पैसा खेलों पर न लगकर अधिकारियों के ऐशो–आराम एवं प्रबन्धकीय तौर तरीकों तथा राजनीति की भेंट चढ जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र में शोधकर्ता ने कुछ ऐसे ही विषयों को उठाने का प्रयास किया है व जो वर्तमान समय में भारतीय खेलों में मुख्य रूप से कैन्सर की तरह से देखे जा सकते है।

भारतीय खेलो की मुख्य समस्यायें:

(1) प्रबन्धन एवं प्रशासनः– किसी भी व्यवस्था को दुरूस्त रखने के लिये आवश्यक है कि उसका प्रबन्धन एवं प्रशासन भी स्वस्थ एवं कुशल हो। किन्तु वर्तमान में प्रबन्धन एवं प्रशासन ही भारतीय खेलों की मुख्य समस्या बना हुआ है। यूं तो किसी भी व्यवस्था के मुख्यतः तीन कारक माने जाते है – व्यवस्था, प्रबन्धन एवं प्रशासन किन्तु इनमें से सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है प्रबन्धन क्योंकि यही कार्यक्रमों के निर्माण एवं विकास हेतु उत्तरदायी होता है। प्रबन्धन नीतियां बनाता है और प्रशासन उसका अनुपालन करता है। भारतीय खेलो में प्रबन्धन एवं प्रशासन दोनो ही स्तर पर ढेरों खामियां है। सर्वप्रथम तो प्रशासनिक अधिकारियों का चुनाव लोकतांत्रिक तरीके से नही होता दूसरा इन पदों पर खेल से जुडे व्यक्ति कम बल्कि राजनीति से जुडे व्यक्ति ज्यादा होते है। तीसरा यह कि इसके लिये किसी भी तरह की डिग्री धारण करने की भी आवश्यकता नहीं, इसके अतिरिक्त अधिकारी इन पदों पर आजीवन बने रहने की चेष्ठा करते है ताकि इनकी आय में इजाफा होता रहें, खेल एवं खिलाड़ी का हित चाहे कितना भी प्रभावित हो फर्क नही पडता।

कहने को भारत में बहुत सारी प्रशासनिक संस्थाये हैं किन्तु इनका कार्य–व्यवहार बिल्कुल गैर–व्यवसायिक है क्योंकि जिस कार्य हेतु इनका निर्माण होता है उसके प्रति इनका दृष्टिकोण बहुत अच्छा नही देखा जा सकता । राजनीतिज्ञ इन संस्थाओं को शीर्ष अधिकारी के रूप में बैठ जाते है जिन्हे खेल का बिल्कुल भी अनुभव नही होता जिससे खेल की समस्या बढती जाती है। शोधार्थी का यह मानना है कि खेलो से सम्बन्धित अधिकारियों की कुछ न्यूनतम शैक्षिक होना आवश्यक है जिसमें स्नातक स्तर पर कम से कम शारीरिक शिक्षा का अध्ययन अवश्य किया गया हो। खेल संस्थानों को भी अपना दृष्टिकोण खेलों के उत्थान के प्रति बदलना होगा। इनकी निगरानी हेतु पूर्व खिलाडियों को कमर कसनी होगी। पूर्व खिलाड़ी खेल नीतियों के निर्माण में भी सक्रिय भागीदारी करने की व्यवस्था सुनिश्चित करें। साथ ही प्रशासनिक अधिकारियों का कार्यकाल निश्चित हो व चयन प्रक्रिया पूर्णतया लोकतांत्रिक रहे।

(2) खेलों एवं खिलाडियों की अर्थव्यवस्थाः– भारतीय खेलों की आर्थिक स्थिति भी वर्तमान में एक बड़ी समस्या है। खेलों के विकास हेतु वित्त वितरण की अनियमितता एवं असमानता लोकप्रिय खेलों को धीरे–धीरे मृत्यु की ओर बढ़ा रही है। खेलों की इस प्रकार वित्तीय असमानता से खेल एवं खिलाड़ी दोनो के हित प्रभावित होते है।

खिलाड़ियों को मिलने वाला धन व सम्मान भी काफी कम होने की वजह से ज्यादातर खिलाड़ी आर्थिक स्थिति से जुझते रहते हैं । बहुत से अन्तर्राष्ट्रीय खिलाडी जैसे लिम्बाराम, ज्योर्तिमय सिंकदर आदि की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में तो संसद तक बात पहुंची किन्तु परिणाम वही ढाक के तीन पात। इसी प्रकार इन खिलाडियों की पेशंन दिलवाने की गुजारिश भी कई बार उठायी गयी ज्योर्तिमय सिंकदर, मिल्खा सिंह जैसे भारत को गौरवान्वित करने वाले खिलाड़ियों ने खिलाड़ियों पर खर्च होने वाले बजट का बारम्बार विरोध किया किन्तु नतीजा फिर भी शिफ़र ही रहा। अर्न्तराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों को मिलने वाली वित्तीय सहायता इतनी कम है कि खेलों में आने के लिये कोई अपने बच्चों को आगे नही भेजना चाहता। संक्षिप्त में कहें तो भारत में एक बहुत प्रचलित कहावत ''खेलों कूदोगे बनोगें खराब'' आज भी चरितार्थ हो रही है।

(3) खेल सुविधाओं का अभावः–हमारे अधिकारी गांवो व शहरो में से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को खोजने का नाटक तो करते है किन्तु हकीकत यह है कि आज तक इस व्यवस्था का कोई बुनियादी ढांचा खड़ा नहीं हो सका है। यहां तक कि जिले स्तर पर भी अच्छे स्टेडियम एवं खेल सुविधाओं का अभाव है। देश के मैट्रो सिटी समेत अन्य विकसित जिले जैसे बैंगलोर, कोच्चि, आदि भी आज अर्न्तराष्ट्रीय स्तर की खेल सुविधायें मुहैया नही करा पाते है। अगर हम अर्न्तराष्ट्रीय स्तर की स्पर्धाओं में सक्रिय भागीदारी चाहते है तो खिलाड़ियों को मिलने वाली मूल भूत सुविधाओं में इजाफे के साथ–साथ संसाधनों का विकास भी सुनिश्चित करना पड़ेगा।

(4) पुरूस्कारों में अनियमितताः– खेल प्रशासन व प्रबन्धन खेलों के प्रोत्साहन हेतु समय–समय पर विभिन्न प्रकार के खेल पुरूस्कारों की घोषणा करता है जिसका उददेश्य होता है खेल खिलाड़ी एवं इससे जुड़े हुए लोगो को प्रोत्साहन तथा सम्मान मिले इसके लिये राजीव गांधी खेल रत्न, द्रोणाचार्य, अर्जुन एवं ध्यान चन्द सहित अनेको पुरूस्कार प्रदान करने की व्यवस्था है, किन्तु दुर्भाग्यवश इसमें भी अन्दरूनी खेल चलता है। पात्र खिलाड़ी एवं सुयोग्य व्यक्तियों को वंचित कर अधिकारियों की पसन्द के अनुसार पुरूस्कार दिये जाते है। समय–समय पर अभिनव बिन्द्रा, राज्यवर्धन, मिल्खा सिंह आदि महान खिलाड़ी इस पुरूस्कार वितरण की अनियमितता पर प्रश्न चिन्ह लगा चुके है। अभी हाल ही में महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचन्द के स्थान पर राजनीतिवश सचिन तेन्दुलकर को पहली बार खिलाड़ी के रूप में भारतरत्न देने की घोषणा भी खेल प्रेमियों के गले नही उतर रही है। ऐसा नही है कि सचिन की प्रतिभा पर किसी को सन्देह है बल्कि मेजर ध्यानचन्द भी उसी स्तर के खिलाडी है जो भारत के गौरव का प्रतीक है।

(5) क्रिकेट के बोझ से दबे अन्य खेलः— आने वाली पीढी के बच्चो से यदि पूछा जाये कि भारत का राष्ट्रीय खेल क्या है ? तो शायद वह किकेट ही बतायें क्योकि खेल के रूप में गांव हो या शहर आज हर बच्चा क्रिकेट ही खेलना चाहता है। भारतीय देशी खेल एवं अन्य परम्परागत खेलों में अधिकांश बच्चों की कोई रूचि नही होती । आज बच्चे हो या बड़े क्रिकेट के एक–एक खिलाडी का पता है किन्तु भारतीय राष्ट्रीय खेल हॉकी का कप्तान शायद ही किसी बच्चे को पता हो। अन्य खेलों के खिलाड़ियो के बारे में कहना ही क्या? हमारी मीडिया भी क्रिकेट हेतु विशेष प्रसारण रखती है किन्तु अन्य खेलों में जीतने के बाद भी संक्षिप्त खबर दे दें तो वह भी गनीमत की ही बात है। देश की राजनीति व्यवस्था भी इस खेल को सब्सिडी प्रदान कर अधिकारियों, क्रिकेट खिलाडियों के भंण्डार भर रही है। अन्य खेलों के लिये उसके पास भी कोई व्यवस्था नही। साथ ही भारतीय खेलों के साथ उसका सौतेला व्यवहार का प्रमाण यह है कि प्रथम बार भारत रत्न पुरूस्कार खेलो के लिये दिया गया और वह भी क्रिकेट खिलाड़ी को ही गया। यहां खिलाड़ी की प्रतिभा पर संदेह नही है, किन्तु अधिकारियों द्वारा अन्य खेलों के खिलाड़ियों के प्रति रूझान पर संदेह जरूर होता है।

(6) प्रशासनः—खेल अपने आप में एक अनुशासित विषय है। यही अनुशासन खेल व खिलाड़ी दोनो को महान बनाता है किन्तु अधिकारियों की लापरवाही से हमें अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर बार–बार शर्मिन्दा होना पडता है। अभी हाल ही में ज्वाला गट्टा प्रकरण में खिलाडी को अधिकारियों के कोच का भाषण बनना पडा, हालांकि जांच अभी जारी है जबकि प्राथमिक स्तर पर शायद गलती उसकी नही थी। इसी प्रकार खिलाडी नशे एवं ड्रग्स का सेवन न करें इसके लिये भी राष्ट्रीय स्तर पर एन्टी डोपिंग विभाग बने है किन्तु यह भी ना–काफी हैं। खेलों में मैच फिक्सिंग, पक्षपात तरीके से प्राप्त कि गयी जीत अक्सर, खेलों में हिसां, पुरूस्कारों के वितरण में पक्षपात आदि भी खेलों की विभिन्न प्रकार की गहरी समस्याओं के रूप में देखी जा सकती है।

खेल समस्याओं के निराकरण हेतु सुझाव

खेल हमारे समाज का हिस्सा है जो लोगो में सामाजिकता व मैत्री भाव बढाता है। खेल हमारी संस्कृति का वाहक भी है। इसकी भावना अत्यन्त पवित्र है। अतः यह एक महान उपागम है। हम सब इसके संरक्षक है हम सबका दायित्व है कि इसकी पवित्रता बरकरार रखें। यदि हम खेलों में चीन व अमेरिका की बराबरी करना चाहते है तो हमें अभी से कमर कसनी होगी जिसके लिये कुछ सुझाव निम्नलिखित है–

1.खेल से जुड़े समस्त प्रबन्धकीय अधिकारियों की न्यूनतम योग्यता निर्धारत हो।
2.खेल से जुड़े अधिकारी पूर्व खिलाडी या शारीरिक शिक्षा से जुडे व्यक्ति ही हो।
3.खेलों से सम्बन्धित फेडरेशनो की संख्या कम से कम हो । फैडरेशन दो टर्म्स से अधिक के नही होने चाहिये।
4.फैडरेशन की अवधि पांच वर्ष की हो एवं इसकी चयन प्रक्रिया लोकतात्रिंक हो ताकि इस पर नियंत्रण आसान रहे।
5.खिलाडियों के लिये सरकारी नौकरियों में अवसर बढाये जाये, वर्तमान में सिर्फ 5–6 प्रतिशत खिलाडी ही नौकरी प्राप्त कर पाते है।
6.खिलाडियों की पेंशन योजना की भी मंजूरी हो ताकि खिलाडी आर्थिक तंगहाली से आत्महत्या पर मजबूर न हो।
7.खेलों को स्कूल पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाया गया है किन्तु इसका अनुपालन मजबूती से यथार्थ स्तर पर किया जायें।
8.ग्रामीण स्तर, ब्लाक स्तर एवं जिले स्तर पर स्टेडियम, जिमखाना आदि का अधिक से अधिक निर्माण हो ताकि प्रतिभाओं का तराशने का कार्य आसान हो सकें।
9.सट्टेबाजी, फिक्सिंग, ड्रग्स आदि से सम्बन्धित कानून अधिक सख्त हो एवं इसका अनुपालन भी कड़ाई से कराया जाये।
10.मीडिया एवं सरकार क्रिकेट की ही भांति अन्य खेलों को लोकप्रिय बनाने के अन्य कार्यक्रम संचालित करें।
11.अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर देश को गौरविन्त करने वाले खिलाडियों को विशेष पुरूस्कारों की व्यवस्था हो, ताकि अन्य खिलाड़ी भी प्रोत्साहित हो सके।
12.खेलो में तकनीक का समावेश हो ताकि प्रतिभाओं को अर्न्तराष्ट्रीय स्पर्धा के अनुरूप बनाया जा सके।
13.खेलों में आने वाले पैसों का 60–70 फीसदी हिस्सा खिलाड़ियों पर खर्च होना चाहिये।
14.खिलाड़ियों के बच्चों व परिवार हेतु परिवहन, एवं अन्य सरकारी सुविधाओं की भी सब्सिडाइड व्यवस्था सुनिश्चित की जाये।
15.खिलाड़ियों की शैक्षिक स्थिति मजबूत करने हेतु रात्रिकालीन कक्षाओं की व्यवस्था की जाये।
16. Sport Authority of India (SAI) को मजबूत खिलाड़ियों को दी जाने वाली सुविधायें बढायी जाये।
17.महिला खिलाड़ियों के यौन उत्पीड़न से सुरक्षा हेतु कड़े कानून बने एवं उनका अनुपालन सुनिश्चित हो।

निष्कर्ष

खेल एक ऐसा उपागम है जो मानव को एक अच्छा व सामाजिक इंसान बनाता है। " It is a Process of Churning a good human being, a good Citizen" क्योंकि खेल में लिये जाने वाले फैसले तलवार व बन्दूक द्वारा न होकर खिलाडी के हुनर व उसकी मानसिक शक्ति का परिणाम होते है। खेल में जो हारता है वह भी तथा जो जीतता है वह भी अन्त में आपस में हाथ मिलाते हुये एक दूसरे को प्रोत्साहित करते है। इससे दोस्ती, भाईचारा, व मैत्री भाव बढता है। इसलिये शोधकर्ता का मानना है कि अगर देश में सब से ज्यादा सुविधायें किसी को देनी है तो वह है सैनिक और खिलाड़ी क्योंकि दोनो ही खून–पसीना बहाकर देश के गौरव को बढाने का कार्य करते है। ––''साईं''; ।I) जैसी अथॉरिटी की भूमिका और मजबूत करनी होगी। खेल एवं खिलाडियों के उत्थान में NGO's की भूमिका भी सुनिश्चित करें। यदि हम पदक तालिका में चीन, अमेरिका जापान जैसे देशो की श्रेणी में आना चाहते है तो हमे अपनी खेल व्यवस्था में मूल–भूत तरीके से

सुधार करना होगा। मीड़िया एवं राजनीतिज्ञों को भी भारतीय खेल परम्पराओं व संस्कृति को बढावा देने वाले खिलाडियों के विषय में सोचना होगा ताकि आने वाले समय में हमारे खिलाडी देश का गौरव बढाने हेतु अधिक से अधिक संख्या में तैयार हो सके हमें एक या दो पदक पाकर अगली बार कुछ अच्छा होने की उम्मीद वाली बीमारी से बचना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1.लोकसभा वाद–विवाद गुरूवार 17 श्रावण, 1924 (शक) 08.08.2002, पृष्ठ क्रमांकः 290
2.Calling Attention के तहत उठाये गये मामले द्वारा श्रीमती ज्योर्तिमयी सिकन्दर, कृष्णानगर) 12/05/05 पृष्ठ क्रमांकः 14703 से 14713
3.डिमार्केशन ऑफ रिसपान्सिबिलिटीः गर्वनमेंट ऑफ इण्डिया।
4.www.sportsauthorityindia.com
5.jones:problems and polutions in sports.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net